प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/27

चूजों का वैज्ञानिक पालन-पोषण

(मुर्गीपालन का मुख्य आधार)

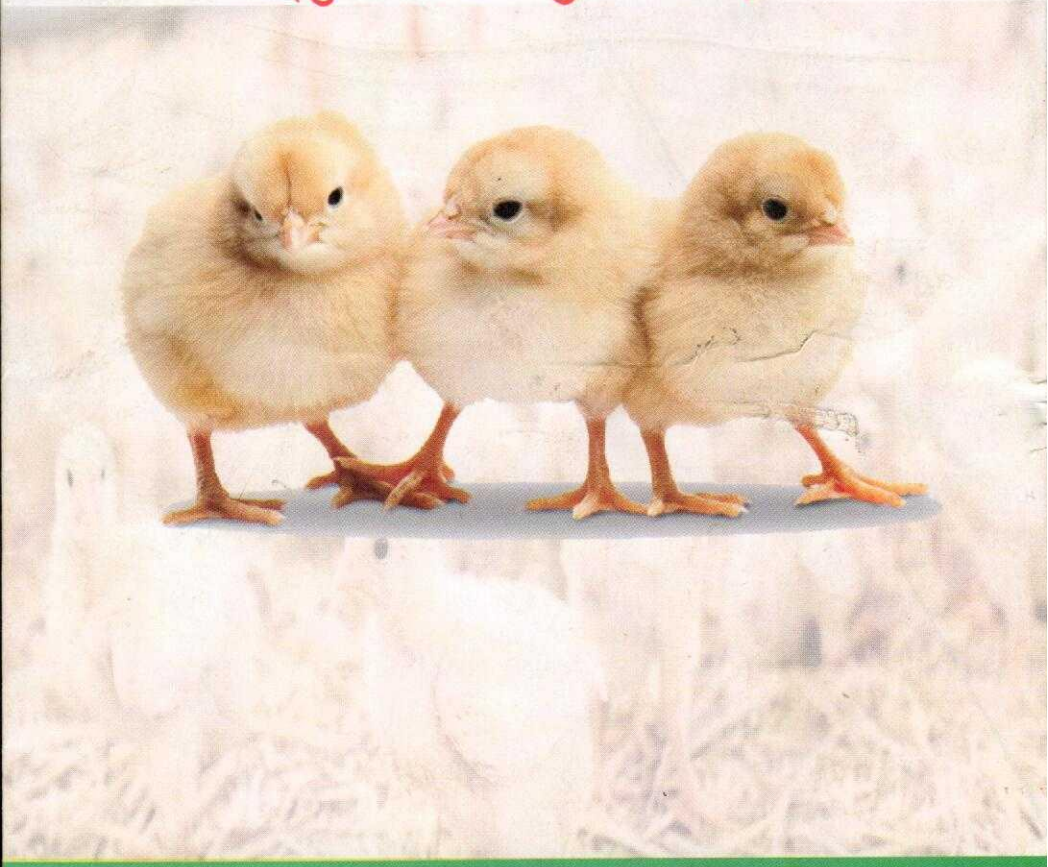

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

चूजों का वैज्ञानिक पालन–पोषण (मुर्गीपालन का मुख्य आधार)

मुर्गीपालन एक रोजगारपूरक व्यवसाय है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह व्यवसाय अब लघु उद्योग का रूप ले चुका है। इस व्यवसाय से अधिक लाभ लेने के लिए यह आवश्यक है कि, मुर्गी के चूजों की देख–भाल वैज्ञानिक विधि से की जाय। एक दिन की उम्र के चूजे बड़े ही कोमल होते हैं, अत; इनकी देख–रेख पर विशेष ध्यान नहीं देने पर उनकी मृत्युदर अधिक हो जाती है।

बिमार चूजों में निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं;

1: चूजें सुस्त, व्याकुल, परों को झुकाये हुए होते हैं।
2: निर्बल दशा में दिखायी देना।
3: सांस लेने में कठिनाई होती है।
4: दाना चुगना बिल्कुल बंद कर देते हैं।
5: पानी पीना कम कर देते हैं।
6: ब्रुडर हाउस में चूजे बिजली के बल्ब के पास इकटठा हुए एक दुसरे से सिमटे हुए दिखायी पड़ते हैं, मानो अधिक ठंड खा गये हों।
7: चुजों मे सफेद रंग का पतला दस्त होता है।

चूजे बिमारी से बचे रहें इसके लिए आवश्यक है कि, सदैव सवस्थ्य तथा फुर्तीले चूजें ही खरीद, खरीदते समय इस बात की पूर्ण जानकारी कर लेनी चाहिये कि वे किसी रोग से ग्रस्त तो नहीं हैं। मुर्गीयों के बच्चों को रानीखेत और चेचक से बचाने के लिये नियमित टिकाकरण करवाना चाहिये।

चूजों की शारिरिक वृद्वि सुचारू रूप से होती रहे इसके लिये आवश्यक है कि, उनकी सही ढ़ग से देख–रेख की जाय। चूजे के शरीर का तापमान 107°फारेनहाइट होता है, तथा प्रारंभ में उनके शरीर पर बाल बहुत कम होते है, तथा पंख बहुत ही छोटे होते हैं अतः वे अपने शरीर कें तापमान को बरकरार रखने में असमर्थ होते हैं। ऐसे समय में चूजों को कृत्रिम विधि द्वारा एक निश्चित तापमान देने की आवश्यकता पड़ती है। शुरू के चार सप्ताह के मुर्गी चूजों की अधिक देख–रेख करनी पड़ती है।

सहुलियत के लिए, चूजों के पालन–पोषण को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1.चूजा घर की तैयारी (चूजा लाने से पहले)

क. जिस घर में चूजे पाले जाने वालें हों उस घर को दस दिन पहले दस लिटर पानी में एक किलो कली चूना के हिसाब से पुतवा दें। इसके एक दिन बाद चूजा घर को 0.5 प्रतिशत मैलाथियान या 0.5 प्रतिशत सुमियान जैसी किटनाशी के घोल से बराबर रुप से छिड़काव करावें। तत्पश्चात घर को खुला छोड़ दें ताकि खुली हवा का आदान–प्रदान तथा वातावरण नमी रहीत हो पाये।

ख. चूजा घर में काम में आने वाले बिछावन पुराने नहीं होने चाहिए तथा उन्हं धूप में अच्छी तरह सुखाकर चूजा लाने के तिन दिन पहले एक से तिन ईच मोटी तह के रूप में बिछा दें। बिछावन के रूप में धान की गुण्डी, लकड़ी का बुरादा या महीन नवारी की कुट्टी का उपयोग सस्ता एंव सुलभ होता ह।

ग. एक दिन से चार सप्ताह तक के चूजे की दख–भाल को ब्रुडिंग कहते हैं। ब्रुडर–घर के तापमान को नीयत बनाये रखने के लिए बाजार में उपलब्ध ब्रुडर लगाया जाता है, तथा इसे चूजा लाने से एक दिन पहले ही इस प्रकार चालू कर लिया जाता है कि, ब्रुडर हाउस का तापमान 95°F बरकरार रहे। ब्रुडर के चारो तरफ 10–12 इंच की दूरी पर चूजा गार्ड लगाते हैं।
चूजों के लिए औसतन 8 से 12 वर्ग इंच प्रति चूजा के हिसाब से स्थान की आवश्यकता पड़ती है।

घ. चूजा लाने से पुर्व ही दाना एवं पानी वाले बर्तनों को मरम्मत, साफ–सूथरा एवं किटाणुरहित कर लेना चाहिए। पानी के लिए जालीनुमा या कम चौड़े बर्तनों को रखना चाहिए, जिससे चूजे घुसने न पाये। इसके लिए प्रति 25 चूजों के हिसाब से तीन इंच चौड़ा, ढाई इंच उंचा तथा 36 इंच लम्बा नाप वाले अल्युमुनियम या पलास्टीक के बरतन का उपयोग करना चाहिए। खाने तथा पिने के सहुलियत के लिए दाने के बीच एक पानी का बर्तन रखना चाहिए।

ड. चूजा घर में रात्रि समय हल्की रोशनी रखनी चाहिए। इसके लिए प्रति 100 वर्गफुट जगह के लिए एक 25 वाट का बल्ब लगाना चाहिए। सुदूर देहात में जहां विद्युत का अभाव हो वहॉ यह काम लालटेन या लैम्प टांगकर किया जा सकता है। रोशनी में चूजे एक दूसरे को नोचेंगे नहीं।

2.चूजे को हैचरी से खरीदना एंव लाना :

क. सरकारी एंव प्रतिष्ठित हेचरी से ही व्यवसाय करें।
ख. स्वस्थ्य एंव उद्देश्यपूर्ण प्रजाती के चूजे मुर्गीपालन विशेषज्ञ के राय पर खरीदें।
ग. चूजों को मेरेक्स बिमारी से बचाव का टीका लगा होना चाहिए।
घ. हैचरी से निकलने के बाद 24 घंटें के अंदर चूजों को चूजा गृह तक पहुँच जाना चाहिए।
ड. चूजों को ब्रुडर के नीचे रखने के पहले 4 प्रतिशत ग्लुकोज का घोल उन्हें देना चाहिए।
च. सभी टीका नियत समय पर ही लगवाना चाहिए।

3.चूजा गृह में चूजों का साप्ताहिक देख–भालः

क. पहले सप्ताह में:

1.चूजों को लाने के तुरंत बाद उन्हें ब्रुडर के निचे रखना चाहिए जिसका तापमान पहले से ही 95° फारेनहाइट रखा गया हो।
2.प्रथम दो से तीन दिनों तक चूजों कों केवल मकई का दर्रा को अखबार के उपर छींटकर देना चाहिए। ऐसा करने से वे दाना खाना सीख लेते हैं, तत्पश्चात् उन्हें बर्तन में खिलाना चाहिए।
3.कमजोर तथा बिमार चूजों को छटनी कर उन्हें अलग पालना चाहिए।
4.पहले दिन उन्हें एक ग्राम होस्टा– साइक्लीन तथा आधा चम्मच ग्लूकोज प्रति लिटर पानी में घोलकर देना चाहिए।

ख. दूसरे सप्ताह में:

1.ब्रुडर का तापमान 5° फारेनहाइट कम करके 90° फारेनहाइट पर ही रखे:
2.चूजा गार्ड ब्रुडर से थोड़ी दूर हटा दें।
3.चूजों की छटनी कर कमजोर तथा रोगग्रस्त चूजों को अलग पालें।
4.रानीखेत बिमारी का टीका लगवा दें।

ग. तिसरे सप्ताह में:

1.ब्रुडर का तापमान 5°फारेनहाइट कम करके 85°फारेनहाइट कर दें।
2.चूजा गार्ड हटा दें।
3.सभी चूजों के उपरी चोंच का तिहाई भाग काट दें।
4.खूनी दस्त तथा अन्य जिवाणु जनित रोगों से बचने के लिए एंटिबायोटिक दवा को पानी के साथ तीन दिनों तक चूजों को पिलावें।
5.कभी–कभी रात्री में रौशनी बन्द कर दें।

घ. चौथे सप्ताह में:

1.ब्रुडर का तापमान 5°फारेनहाइट कम कर दें, अर्थात् 80°फारेनहाइटरखें।
2.रात्री में रोशनी बीच–बीच में बन्द कर दें तथा कमजोर चूजों को अलग रखें।
3.पेट के कीड़े मारने की दवा बाजार से खरीदकर(विशेषज्ञ की राय से) 30 ml. प्रति लिटर पानी में मिलाकर प्रति 100 मुर्गीयों के हिसाब से 7 दिनों के अंतराल पर दो बार पिलावें।

यहाँ ध्यान रहे कि, चूजे तापमान के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं अतः चूजों को हैचरी से खरीदकर लाने के पश्चात् उन्हें निधारित तापमान पर ही रखें। चूजों का वैज्ञानिक पालन पोषण मुर्गीपालन का मुख्य आधार है, क्योंकि चूजे मुर्गीपालन की प्रथम कड़ी है और मुर्गीपालन से अत्यधिक लाभ तभी संभव है जब चूजों का पालन पोषण वैज्ञानिक तरीके से की जाय।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- सरोज कुमार रजक, पुष्पेन्द्र कुमार एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN